बेनज़ीर भुट्टो

# जब मैं आखिरी बार अब्बा से मिली

बेनज़ीर हमारे जुड़वाँ और पड़ोसी देश पाकिस्तान की प्रधानमंत्री रही हैं। दो बार! बीते 27 दिसम्बर को उनकी हत्या हुई। बेनज़ीर के पिता जुल्फिकार अली भुट्टो भी पाकिस्तान के प्रधानमंत्री व राष्ट्रपति रहे हैं। 1979 में उन्हें वहाँ के सैन्य शासन ने फाँसी की सज़ा दे दी। बेनज़ीर ने अपने अब्बा से आखिरी मुलाकात को अपनी आत्मकथा - *डॉटर ऑफ डेस्टिनी* में याद किया है। यहाँ इस किताब का एक अंश प्रस्तुत है...

**जूनियर** जेलर के सामने मैं बेबाक खड़ी थी। मेरे हाथों में पिता की बची-खुची चीज़ों का थैला था। उनके कपड़ों से अब भी उनके कोलोन की खुशबू आ रही थी। शालीमार कोलोन की खुशबू। मैंने उन कपड़ों को गले लगा लिया। कई रातों तक मैंने अब्बा को अपने साथ रखने की कोशिश की, उनकी कमीज़ को अपने तकिए के नीचे रखकर।

पिछले दो बरसों से ज़िया का सैनिक शासन मेरे पिता पर तरह-तरह के इल्ज़ाम लगा रहा था। मुझे चुनाव लड़ने से रोका गया था। दो बरसों में छह बार मुझे गिरफ्तार किया गया था और अनगिनत बार लाहौर और कराची में पैर रखने की भी मनाही की थी। मेरी माँ को नज़रबन्द कर लिया गया था और अब्बा तो जेल में थे ही।

वह दूसरी अप्रैल 1979 की सुबह थी। मैं नींद से जागी भी नहीं थी। अचानक माँ मेरे कमरे में आईं, "पिंकी!" उन्होंने मुझे हमारे घर के नाम से पुकारा। उनकी आवाज़ में थरथराहट थी। मैं भी कॉप गई। माँ ने कहा, "पिंकी, लश्करी अफसर आया है। कह रहा है कि आज हम दोनों को तुम्हारे अब्बा से मिलने जाना है। क्या मतलब...?"

उसका मतलब मैं भी जानती थी और अम्मी भी। पर खुलकर बोलने का साहस हम दोनों में नहीं था। आज तो माँ की बारी थी। अब्बा से मेरी मुलाकात तो इस हफ्ते के अन्त में होने वाली थी। अफसर ने हम दोनों को एक साथ आने को कहा है। इसका एक ही मतलब था – यह हमारी आखिरी मुलाकात थी। मेरे अब्बा की हत्या होने वाली थी।

मेरा दिमाग एक पल के लिए सुन्न हो गया और फिर तेज़ी से दौड़ने लगा। मैं पाकिस्तान की अवाम (जनता) को और सारी दुनिया को आखिरी आवाज़ लगाना चाहती थी कि वे मेरे अब्बा को बचा लें। मैंने फौरन अम्मी से कहा, "उस अफसर से कह दो कि मेरी तबीयत कुछ ठीक नहीं है। अगर यह आखिरी मुलाकात है तो मैं आऊँगी, पर अगर ऐसा नहीं है तो हम अब्बा से अलग मिलेंगे।"

अम्मी अफसर से बात करने चली गईं। मैंने फौरन एक कागज़ ढूँढ़कर अपनी एक सहेली के लिए खत लिखा। "शायद अब्बा के साथ यह हमारी आखिरी मुलाकात है।" मुझे उम्मीद थी कि चिट्ठी पढ़कर वह पार्टी के नेताओं तक मेरी खबर पहुँचाएगी और वे अवाम को जगाएँगे। आखिर अवाम ही तो हमारी आखिरी उम्मीद थी।

"इसे फौरन यास्मीन तक पहुँचा दो।" मैंने अपने एक विश्वसनीय सेवक इब्राहीम से कहा। यह एक बड़ा खतरा था। सिपाही उसकी तलाशी ज़रूर लेता और अगर वह पकड़ा जाता तो सब की मौत तय थी। पर जितना बड़ा खतरा था उतनी बड़ी उम्मीद भी तो थी।

"जाओ, इब्राहीम।" मैंने उससे कहा, "चौकीदार से कहना कि तुम मेरे लिए दवाइयाँ खरीदने जा रहे हो।"

अफसर मेरी बीमारी की खबर को वायरलेस से भेजने और उसके जवाब के इन्तज़ार में उलझा हुआ था। इब्राहीम गेट पर पहुँचा, "मुझे बेनज़ीर साहिबा के लिए दवाइयाँ लानी हैं।" उसने चौकीदार से कहा। चौकीदार पहले ही मेरी बीमारी के बारे में सुन चुका था। उसने इब्राहीम को जाने दिया। इधर मेरे हाथ-पैर ठण्डे पड़ गए थे। डर था कहीं चौकीदार कोई परची माँग लेगा, तो?

वायरलेस पर जवाब आया। अफसर ने अम्मी से कहा, "बेनज़ीर की तबीयत ठीक नहीं है इसलिए आप कल मुलाकात कर सकते हैं।" और इस तरह मेरे अब्बा को चौबीस घण्टे और ज़िन्दा रहने की इजाज़त मिली।

हमें मुकाबला करना चाहिए। पर कैसे? मैं यहाँ नज़रबन्द थी और अब्बा वहाँ जेल में। मेरे अब्बा की ज़िन्दगी सिकुड़ती जा रही थी।

शाम को बड़ी बेचैनी से बी.बी.सी. एशिया सुना। मेरी जान जैसे गले में अटकी थी। मुझे उम्मीद थी कि मेरी चिट्ठी का कोई तो जवाब मुझे मिलेगा। पर रेडियो पर ऐसा कुछ भी नहीं आया। मैं और अम्मी रो पड़े।

दूसरे दिन एक जीप आकर हमें रावलपिण्डी जेल ले गई। हम दोनों को एक साथ देखकर अब्बा भी ज़रा-सा चौंक गए, "आप दोनों आज एक साथ?"

अम्मी चुप रहीं।

"क्या यह आखिरी मुलाकात है?" उन्होंने पूछा।

अम्मी कुछ बोल न पाईं।

"ऐसा ही लगता है।" मैंने कहा।

उन्होंने जेल सुपरिटेंडेंट की ओर देखा। वे वहीं खड़े थे। हमें अब्बा से अकेले में मिलने की इजाज़त नहीं थी। अब्बा ने पूछा, "क्या यह हमारी आखिरी मुलाकात है?"

"हाँ।" कुछ हिचकिचाते हुए जेल सुपरिटेंडेंट ने कहा।

"कब?"

"कल सुबह, पाँच बजे। जेल के कायदे से।"

"मेरे परिवार के साथ मुझे कितना वक्त मिलेगा?"

"आधा घण्टा।"

"एक घण्टा देने का नियम है।"

"मुझे आधा घण्टा देने का आदेश मिला है।" एक खामोशी के बाद अब्बा ने उनसे कहा, "मेरे लिए नहाने और शेविंग का इन्तज़ाम करना। इस खूबसूरत दुनिया से मैं साफ-सुथरा होकर विदा होऊँगा।"

आधा घण्टा। मेरी ज़िन्दगी के सबसे अहम इन्सान के साथ आखिरी आधा घण्टा! मेरे सीने में दुःख उमड़ आया। मैं रोना नहीं चाहती थी। मुझे टूटता देख अब्बा को भी तो दुख होता।

वे ज़मीन पर बिछे एक कपड़े पर बैठे थे। उन लोगों ने अब्बा के टेबल-कुर्सी और चारपाई हटा लिए थे।

अब्बा ने मुझे कुछ किताबें और पत्रिकाएँ दीं। इन्हें मैं ही कभी उनके लिए लाई थी। "मैं नहीं चाहता ये लोग मेरी चीज़ों को हाथ लगाएँ।" उन्होंने मुझे अपनी बची हुई कुछ सिगार भी दीं। फिर एक सिगार वापस ले कर बोले, "यह आज रात के लिए।" उन्होंने शालीमार कोलोन की एक शीशी भी अपने पास रखी। फिर वे अपनी अँगूठी निकालने लगे, अम्मी ने कहा, "मत निकालिए।"

"ठीक है, अभी नहीं निकालता, पर मेरी मौत के बाद इसे बेनज़ीर को देना।" उन्होंने अम्मी से कहा।

मैंने दबी आवाज़ में उनके कान में कहा, "मैंने सन्देशा भेजने की कोशिश की है।" उन्होंने प्यार से मेरी ओर देखा। उनकी यही ख्वाहिश थी कि मैं राजनीति के दाँव-पेंच सीख जाऊँ।

अब्बा ने अम्मी से कहा, "बच्चों को मेरी ओर से ढेर सारा प्यार देना। उन्हें बताना कि मैंने अच्छा पिता बनने की कोशिश की है। काश, मैं अपने सारे बच्चों को अलविदा कह पाता।"

अम्मी ने सिर हिला दिया, पर कुछ बोल न पाईं। अब्बा ने कहा, "तुम दोनों ने बहुत सहा है। अब जब वे मुझे मार ही डालने वाले हैं तब मैं तुम दोनों को भी आज़ाद कर देना चाहता हूँ। तुम दोनों चाहो तो पाकिस्तान छोड़ सकते हो। वैसे भी यहाँ तो सैनिक शासन है। तुम लोग आज़ादी और चैन चाहते हो तो यूरोप जा सकते हो।"

हम दोनों तड़प उठे। अम्मी ने कहा, "हम नहीं जाएँगे। हम कभी नहीं जा सकते। जनरल को यह नहीं लगना चाहिए कि वे जीत गए। चुनाव होने वाले हैं। अगर हम चले गए तो आपने जिसकी नींव डाली है उस पार्टी का नेता कौन होगा?"

"पिंकी, तुम्हारा क्या कहना है?" अब्बा ने मेरी ओर देखा।

"मैं? मैं तो जा ही नहीं सकती।" मैंने कहा।

अब्बा मुस्कराए, "मैं बहुत खुश हूँ। तुम्हें पता नहीं, तुम मुझे कितनी प्यारी हो। हमेशा से तुम मेरा अनमोल हीरा हो।"

"वक्त पूरा हो गया।" सुपरिटेंडेंट ने कहा। मैंने सलाखों को अपनी मुट्ठी में कस लिया। "दरवाज़ा खोलो, प्लीज़ मुझे अपने अब्बा से अलविदा कहने दो। मेरे अब्बा पाकिस्तान के निर्वाचित प्रधानमंत्री थे। मैं उनकी बेटी हूँ। यह हमारी आखिरी मुलाकात है। मैं उनका हाथ पकड़ना चाहती हूँ।"

सुपरिटेंडेंट ने "ना" कहा।

मैंने सलाखों के बीच अपने हाथ डालकर अब्बा तक पहुँचने की कोशिश की। वे मेरे पास आए और मेरे हाथों को छुआ। मलेरिया, बदहज़मी ने उन्हें कमज़ोर बना दिया था। अपने थके हाथों से मेरे हाथों को छूकर उन्होंने कहा, "अब मैं मुक्त हो जाऊँगा।" उनके थके चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

"मैं अपने माँ-बाप से मिलूँगा। अपने पूर्वजों की ज़मीन पर, लरकाना लौट जाऊँगा। वहाँ की मिट्टी, वहाँ की खुशबू और हवाओं में मिल जाऊँगा। मेरे बारे में गीत लिखे जाएँगे। मैं वहाँ का हिस्सा बन जाऊँगा।" उन्होंने हँसते हुए कहा, "पर पिंकी, लरकाना में धूप बहुत तेज़ होती है।"

मैंने मुश्किल से कहा, "मैं वहाँ आपके लिए एक छत बाँधूँगी।" जेल का अफसर आ चुका था। उसने इशारे से हमें चले जाने का हुक्म दिया।

"अलविदा, अब्बा!" मैंने कहा। मेरी अम्मी उनका हाथ पकड़ने के लिए दौड़ीं पर अफसर ने उन्हें पकड़ लिया और हमें जेल से बाहर ले जाकर छोड़ दिया।

हम दोनों सड़क पर आ गए थे। हर पल मुड़कर देखने का मन कर रहा था, पर मैंने एक बार भी पलटकर नहीं देखा। अगर पलटती तो खुद को रोक नहीं पाती।

"अलविदा! हम फिर मिलेंगे। ज़रूर मिलेंगे।" दूर से अब्बा की आखिरी आवाज़ आई...।

*साभार अनुवादः सोनल पारीख*